ACKNOWLEDGEMENT

We sincerely express our gratitude to **"Teerthdham Manglayatan"** from where we have sourced **"Badhte Charan SecondStandard"**.

"Teerthdham Manglayatan" have taken due care, However, if you find any error, for which we request all the reader to kindly inform us at info@vitragvani.com or to Info@Manglayatan.com **"Teerthdham Manglayatan"**

हमारे जीवन शिल्पी
धर्मपिता
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के
कर कमलों में सविनय समर्पित

हम हैं आपके,
नन्हें-मुन्ने ज्ञायक

जिनवाणी माँ की स्तुति

इतनी शक्ति हमें देना माता ! मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें मोक्ष-मारग में हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।।

दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम, हमको ऐसी तू मोक्षपुरी दे।

बैर हो न किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना।
हम चलें मोक्ष-मारग में हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।।

हम न सोचें हमें क्या मिला है, ये सोचें किया क्या हमने अर्पण।
फूल समता के बाँटे सभी को, हो जीवन सभी का मधुबन।।

अपनी समता का जल तू बहा दे, पावन कर दे हरेक मन का कोना।
इतनी शक्ति हमें देना माता ! मन का विश्वास कमजोर हो ना।

३

द्रव्य

जीव

द्रव्य छह होते हैं।
जिसमें चेतनागुण पाया जाता है अर्थात् जो जानता-देखता है, वह जीवद्रव्य है।

जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण पाये जाते हैं, उसे पुद्गलद्रव्य कहते हैं।

पुद्गल

४

धर्म

स्वयं गतिरूप परिणमित जीवों और पुद्गलों को गमन के समय जो निमित्त हो, उसे धर्मद्रव्य कहते हैं।
जैसे - तैरती हुई (गमन करती हुई) मछली को जल।

स्वयं गतिपूर्वक स्थिति परिणाम को प्राप्त हुए जीवों और पुद्गलों को स्थिर होने में जो निमित्त है, उसे अधर्मद्रव्य कहते हैं।
जैसे - रुकने (स्थिर) होने के इच्छुक यात्री को वृक्ष की छाया।

अधर्म

आकाश

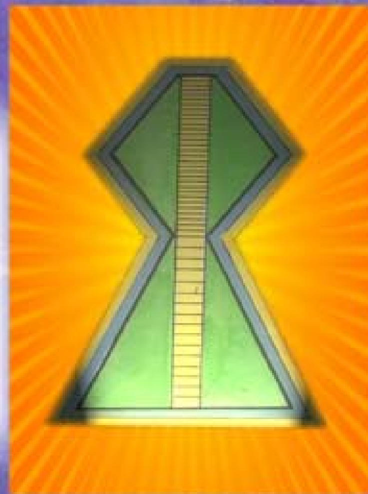

जो जीवादि सभी द्रव्यों को रहने के लिए स्थान देने में निमित्त है, उसे आकाशद्रव्य कहते हैं।

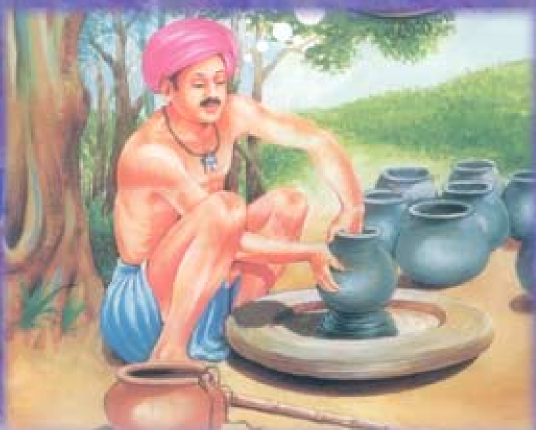

काल

अपनी-अपनी अवस्थारूप से स्वयं परिणमते (बदलते) हुए जीवादि सभी द्रव्यों के परिणमन में जो निमित्त हो, उसे कालद्रव्य कहते हैं। जैसे - कुम्हार के चाक को घूमने में लोहे की कील।

धर्मनगरी अलीगढ़ में पंच कल्याणक महोत्सव की तैयारियाँ चल रही हैं। वृद्धजनों, युवकों के साथ-साथ बालकों में भी उत्साह है। छोटा सा बालक अनुभव, अपनी माँ से पंच कल्याणक सम्बन्धी चर्चा कर रहा है।

अनुभव :- माताजी ! पंच कल्याणक क्या होता है ?

माताजी :- बेटा ! आपने चौबीस तीर्थंकरों के नाम याद किये थे न ! उन्हीं तीर्थंकर भगवन्तों के जीवन की वे पाँच घटनाएँ, जो हमें आत्महित का सन्देश देती है, पंच कल्याणक कहलाती है।

अनुभव :- वे पाँच घटनाएँ कौन-कौन सी हैं ?

माताजी :- गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और मोक्ष ही वे पाँच घटनाएँ हैं।

अनुभव :- तप, ज्ञान और मोक्ष की घटना तो कल्याणक समझ में आयी, परन्तु माताजी गर्भ और जन्म को तो कलंक बताया था, वे कल्याणक कैसे हो सकते हैं ?

माताजी :- वाह बेटा ! आज तुमने अपना अनुभव नाम सार्थक कर दिखाया है। यह सत्य है कि गर्भ और जन्म कलंक हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि जिस गर्भ और जन्म के बाद दुबारा जन्म-मरण न हो, वह गर्भ और जन्म भी कल्याणक ही है। भगवान का फिर से जन्म-मरण नहीं होता; अत: उनके गर्भ और जन्म की घटनाएँ भी कल्याणक ही हैं।

अनुभव :- माताजी ! मुझे पंच कल्याणक के बारे में कुछ विस्तार से बताइये !

माताजी :- सुनो बेटा !

भगवान के ७ पंच कल्याणक

गर्भकल्याणक

भगवान के माता के
गर्भ में आने से पूर्व पन्द्रह
माह तक रत्नों की वर्षा होती
है। छप्पन कुँवारी देवकन्याएँ एवं
अष्ट देवियाँ माता की सेवा
करती हैं। एक रात्रि
माता को सोलह सुन्दर
स्वप्न आते हैं।

८

जन्मकल्याणक

भगवान का जन्म होनेपर
सभी राजा, माता-पिता के पास भेंट
लेकर जन्म की बधाई देने आते हैं।

सौधर्मइन्द्र करोड़ों देवी-देवताओं
के साथ,
बालकुँवर को जन्माभिषेक
के लिए ऐरावत हाथी पर
बैठाकर मेरुपर्वत
पर ले जाते हैं।

१०

इन्द्र तथा देव बालकुँवर का १००८ कलशों से अभिषेक करते हैं।

...और बालकुँवर के बड़े होने पर उनका धूमधाम से राज्याभिषेक करते हैं।

११

दीक्षाकल्याणक

राजसुख भोगते हुए संसार से वैराग्य होने पर पहले मनुष्य फिर देवगण, उन्हें पालकी में बिठाकर दीक्षा के लिए जंगल की ओर प्रयाण करते हैं।

१२

दीक्षाकल्याणक

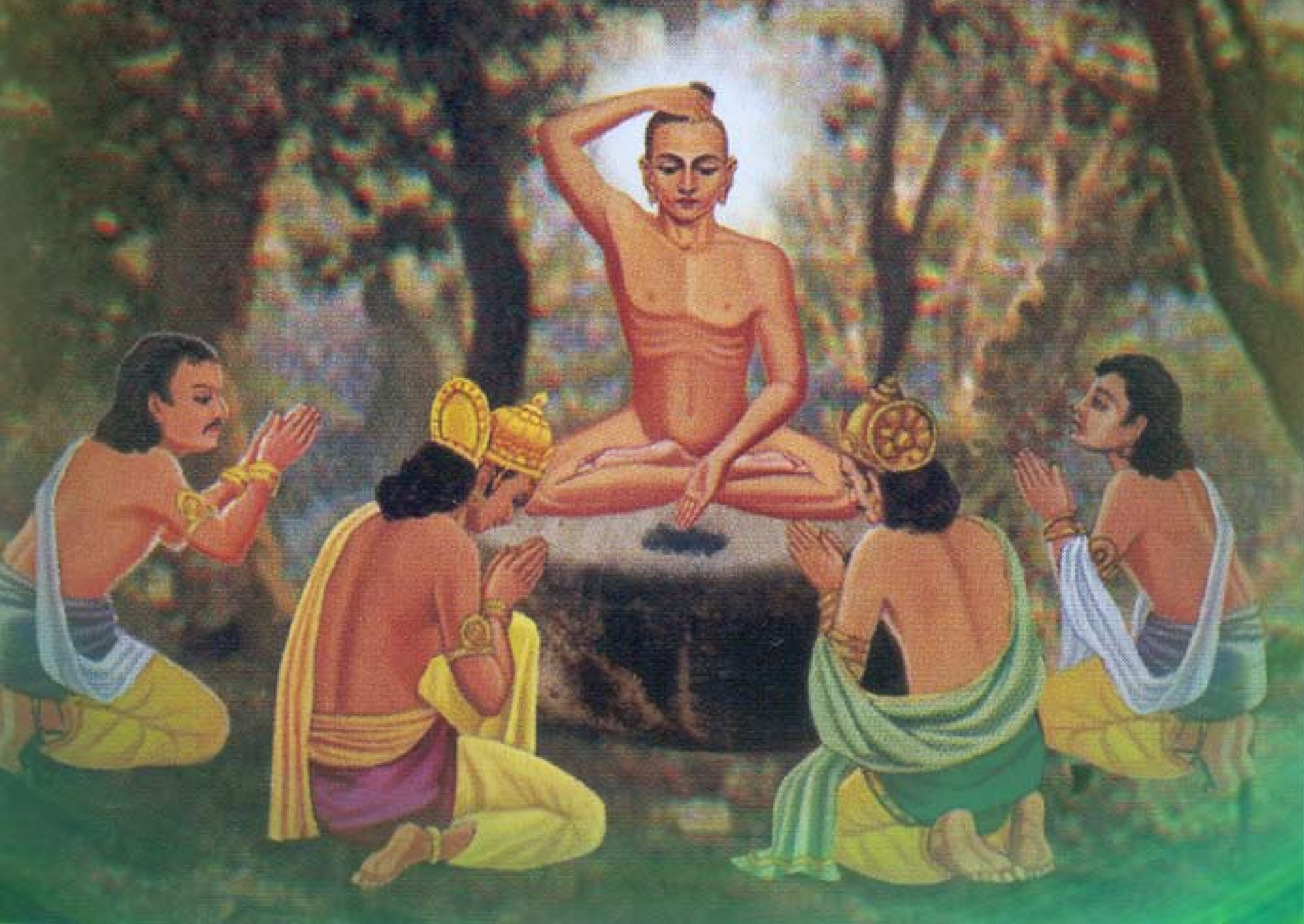

जंगल में वस्त्राभूषण आदि समस्त बाह्य और क्रोध-मान आदि समस्त अन्तरंग परिग्रह छोड़कर नग्न दिगम्बर दशा धारण करके, अपने हाथों से केशलोंच करके मुनिराज, जंगल में आत्मध्यान करते हैं।

१३
केवलज्ञानकल्याणक
भगवान को केवलज्ञान प्रकट होने पर कुबेर, सौधर्मइन्द्र की आज्ञा से समवसरण (भगवान की धर्मसभा) की रचना करते हैं।

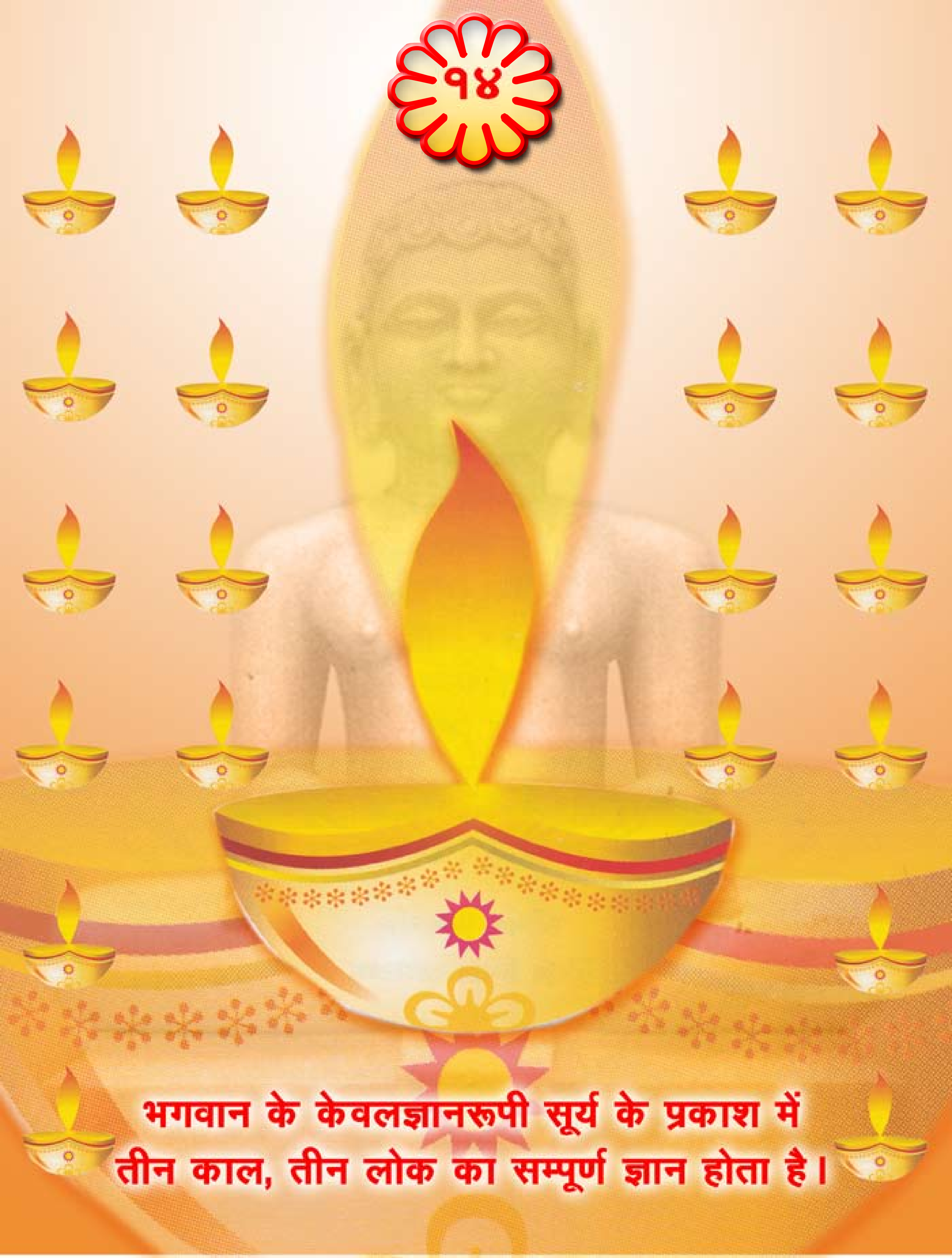
भगवान के केवलज्ञानरूपी सूर्य के प्रकाश में
तीन काल, तीन लोक का सम्पूर्ण ज्ञान होता है।

१५

निर्वाणकल्याणक

भगवान अन्तिम देह का त्याग कर
सदैव-सदैव के लिये सिद्धशिला पर विराजमान होते हैं।
देव आकर निर्वाणकल्याणक की पूजा करते हैं।

अनुभव : माँ, तीर्थंकर भगवान के पाँचों कल्याणकों को जानकर बहुत आनन्द आया। माँ, मैं भी भगवान बनूँगा।

सिद्ध

सिद्ध जीव, पूर्ण वीतरागी और पूर्ण ज्ञानी होते हैं। वे शरीररहित होते हैं। वे परिपूर्ण सुखी होते हैं। वे संसार में फिर से लौटकर नहीं आते। हमें भी संसारदशा का अभाव करके सिद्ध होना है।

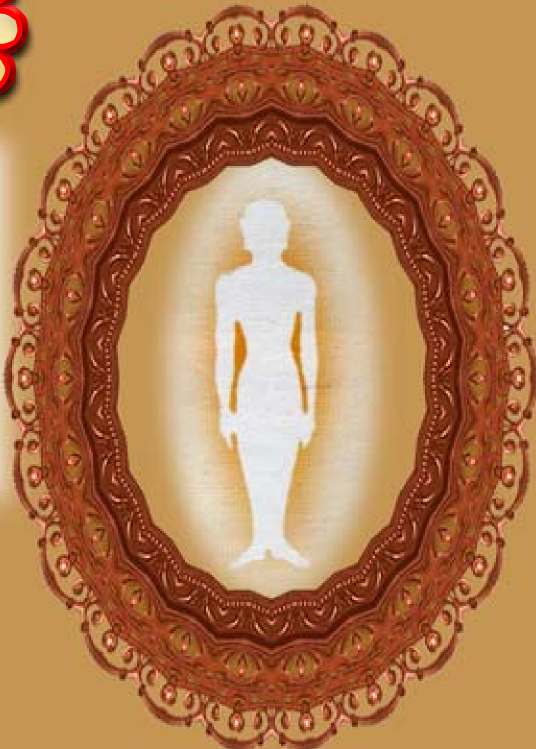

सिद्ध तथा संसारी

संसारी

अज्ञानी जीव, संसारी हैं। वें संसार में परिभ्रमण करते हैं। वे जन्म-मरण करते हुए दुःखी होते हैं।
संसारी जीव, स्वर्ग, मनुष्य, तिर्यंच (पशु) और नरकगति में रहते हैं।

१७

तत्त्व

तत्त्व अर्थात् वस्तु का भाव । जो वस्तु जैसी है, उसका भाव ही तत्त्व है। तत्त्व सात होते हैं।

(१) जीवतत्त्व

जीव अर्थात् आत्मा। वह सदा ज्ञानस्वरूप, पर से भिन्न और त्रिकाल रहनेवाला है।
जीवतत्त्व आश्रय करने योग्य उपादेय है।

(२) अजीवतत्त्व

जिसमें चेतना अर्थात् ज्ञान नहीं है, वह अजीवतत्त्व है। पाँच तत्त्व अजीव हैं, उनमें धर्म, अधर्म, आकाश, कालद्रव्य स्पर्शादि से रहित अरूपी हैं और पुद्गलद्रव्य, स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णसहित रूपी है। अजीवतत्त्व जानने योग्य ज्ञेय है।

(३) आस्रवतत्त्व

जीव में होनेवाली विकारी शुभाशुभभावरूप अवस्था, भावआस्रव है और उस समय नये कर्मयोग्य रजकणों (पुद्‌गलों) का आना, द्रव्यआस्रव है। आस्रवतत्त्व छोड़ने योग्य अर्थात् हेय है।

(४) बन्धतत्त्व

आत्मा का, अज्ञान, राग-द्वेष, पुण्य-पाप भावों में अटक जाना, भावबन्ध है और उस समय कर्मयोग्य पुद्‌गलों का आत्मा के साथ एक क्षेत्र में स्वयं कर्मरूप बँधना, द्रव्यबन्ध है। इसमें जीव की अशुद्ध पर्याय निमित्तमात्र है। बन्धतत्त्व भी छोड़ने योग्य अर्थात् हेय है।

(५) संवरतत्त्व

आत्मा के शुद्धभाव द्वारा पुण्य-पापरूप विकारी आस्रवभाव का रुकना भावसंवर है और उसी समय नवीन कर्मों का आना रुक जाना, द्रव्यसंवर है। संवरतत्त्व प्रगट करने योग्य उपादेय है।

(६) निर्जरातत्त्व

निज आत्मस्वभाव के आश्रय के बल से स्वरूप में स्थिरता की वृद्धि द्वारा, अशुद्ध शुभाशुभ विकारी अवस्था का आंशिक अभाव करना, भावनिर्जरा है और उस समय खिरने योग्य जड़कर्मों का अंशत: खिर जाना, द्रव्यनिर्जरा है। निर्जरातत्त्व प्रगट करने योग्य उपादेय है।

(७) मोक्षतत्त्व

समस्त कर्मों के क्षय के कारण तथा निश्चयरत्नत्रय स्वरूप, परम विशुद्ध परिणाम, भावमोक्ष है और समस्त द्रव्यकर्मों का स्वयं स्वत: आत्मप्रदेशों से अत्यन्त अभाव हो जाना, द्रव्यमोक्ष है।

जीव की पूर्ण शुद्धदशा को मोक्षतत्त्व कहते हैं। मोक्षतत्त्व पूर्ण प्रगट करने योग्य परम उपादेय तत्त्व है।

अनछना जल पीना नहीं।

रात्रि भोजन करना नहीं।

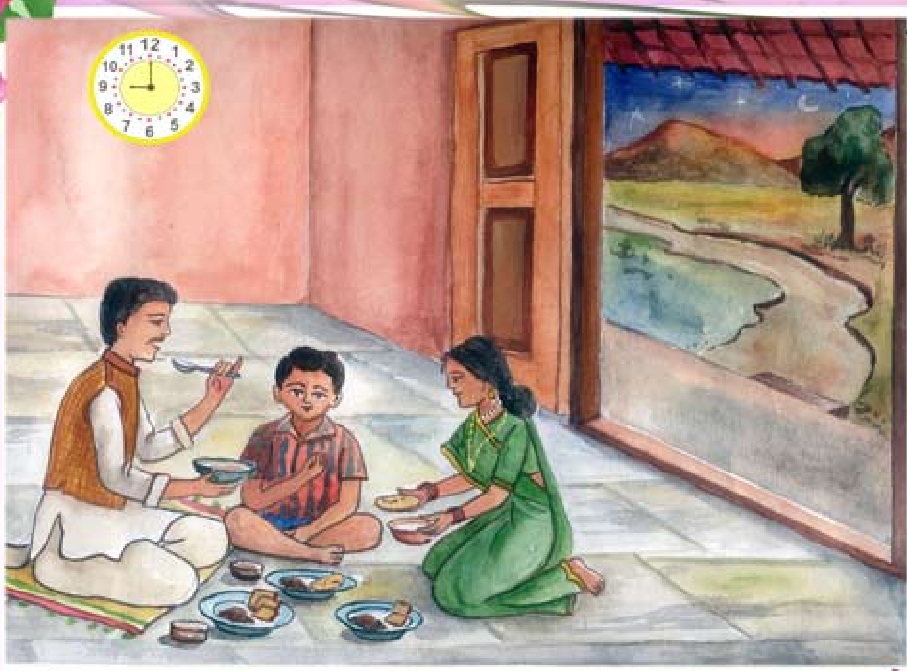

जैनी की पहिचान

२२

हमारे नव देव

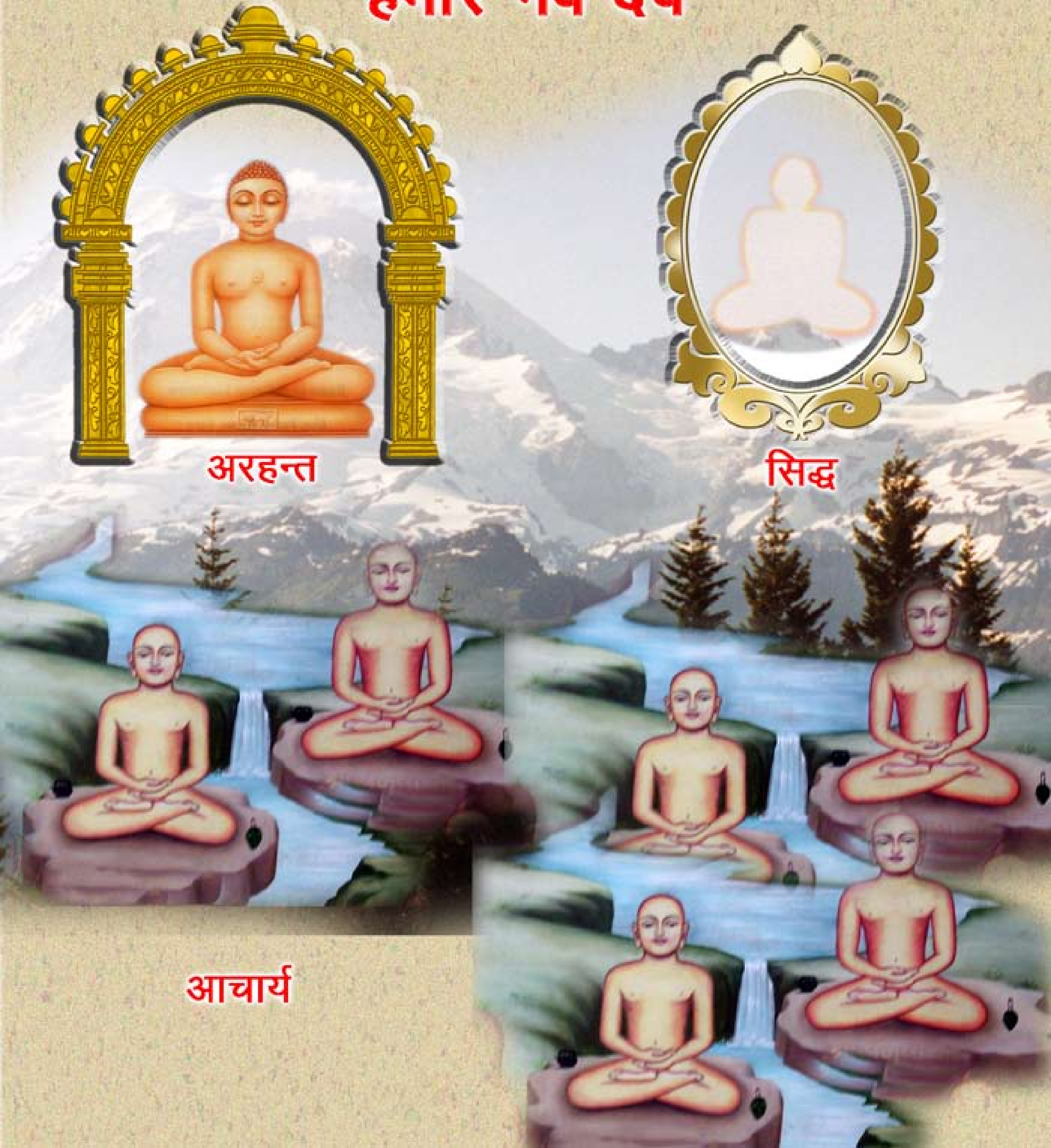

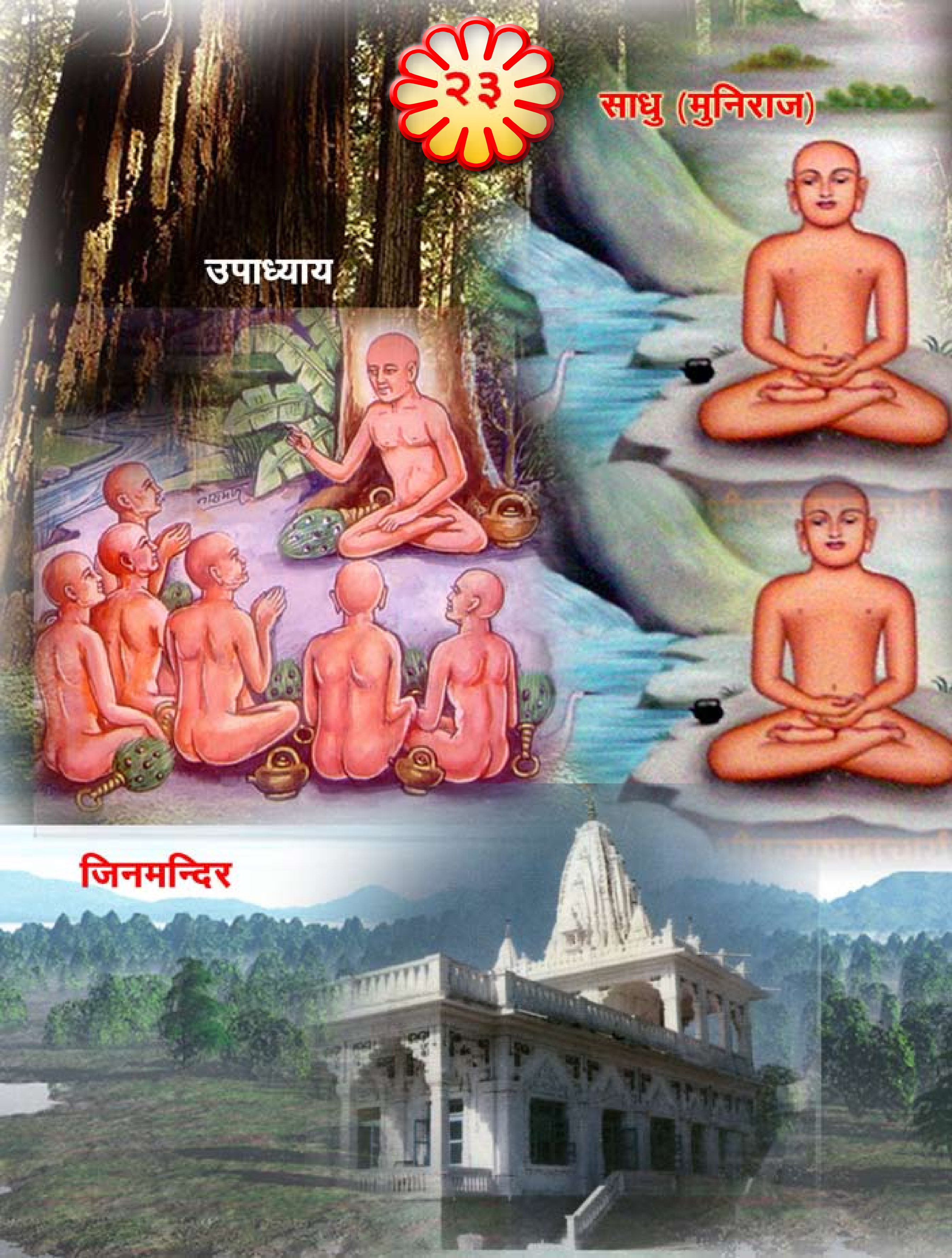
२३
साधु (मुनिराज)
उपाध्याय
जिनमन्दिर

२४
जिन प्रतिमा
जिनधर्म
जिनवाणी
जैन जयतु शासनम्
अहिंसा परमो धर्मः

२५

प्रार्थना

अरहन्त हमारे देव हैं, वे सच्चे वीतराग हैं,
सारे जग के ज्ञाता हैं, मुक्ति-मार्ग दिखाते हैं।
अरहन्त...

जहाँ सम्यग्दर्शन-ज्ञान है, चारित्र वीतराग है,
ऐसा मुक्ति-मार्ग है, जो मेरे प्रभु दिखाते हैं।
अरहन्त...

अरहन्त तो शुद्धात्मा है, मैं भी उनही जैसा हूँ,
आत्मा को जानकर, मुझे अरहन्त होना है।
अरहन्त...

Very sweet very sweet, Jain dharam
I love I love Jain dharam
I shall go on Moksha marg
I shall take my Jain dharam
Very sweet...
Do not take any tension
always says my Jain dharam
Very sweet...
You can solve any problem
if you take our Jain Dharam
Very sweet...

जय जिनेन्द्र बोलिये

जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिये।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से, अपना मौन खोलिये।।
जय जिनेन्द्र...

जय जिनेन्द्र ही हमारा, एकमात्र मन्त्र हो।
जय जिनेन्द्र बोलने को, हर मनुज स्वतन्त्र हो।।
जय जिनेन्द्र बोलकर, हृदय के द्वार खोलिये।
जय जिनेन्द्र...

हे जिनेन्द्र ! ज्ञान दो, मोक्ष का वरदान दो।
कर रहे हैं प्रार्थना हम, प्रार्थना पर ध्यान दो।।
जाग जाग जाग चेतन, बहुत काल सो लिये।
जय जिनेन्द्र...

राग छोड़ धर्म जोड़, यह जिनेन्द्र देशना।
अष्ट कर्म को मरोड़, यह जिनेन्द्र देशना।।
जय जिनेन्द्र बोलकर, खुद जिनेन्द्र हो लिये।
जय जिनेन्द्र...

२८

मेरा धाम

शुद्धातम है मेरा नाम,
मात्र जानना मेरा काम।
मुक्तिपुरी है मेरा धाम,
मिलता जहाँ पूर्ण विश्राम।।
जहाँ भूख का नाम नहीं है,
जहाँ प्यास का काम नहीं है।
खाँसी और जुखाम नहीं है,
आधि व्याधि का नाम नहीं है।।
सत् शिव सुन्दर मेरा धाम,
शुद्धातम है मेरा नाम।।१।।
स्व-पर भेदविज्ञान करेंगे,
निज आतम का ध्यान धरेंगे।
राग-द्वेष का त्याग करेंगे,
चिदानन्द रसपान करेंगे।।
सब सुखदाता मेरा धाम,
शुद्धातम है मेरा नाम।।२।।